❋ 17 जुलाई 2014 की मुरली से मुख्य पॉईन्टस् ❋

❋ ज्ञान-

1] सबसे बड़ा आसूदरी अवगुण है किसी से रफ-डफ बात करना या कटुवचन बोलना, इसे ही भूत कहा जाता है।

2] पिछाड़ी में यह दोन बातें जाकर रहती हैं– जाना है फिर आना है। देखा जाता है इस याद में रहने से शरीर के रोग जो तंग करते हैं, वह भी ऑटोमेटिकली ठण्डे हो जाते हैं।

3] एक अलफ है, बेहद के बाप से बादशाही मिलती है। बाप को याद करने से नई दुनिया याद आ जाती है। अबलायें-कुब्जायें भी बहुत अच्छा पद पा सकती हैं। सिर्फ अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप ने तो रास्ता बनाया है। कहते हैं- अपने को आत्मा निश्चय करो। बाप की पहचान तो मिली। बुद्धि में बैठ जाता है अब 84 जन्म पुरे हुए, घर जायेंगे फिर आकर स्वर्ग में पार्ट बजायेंगे।

4] यहाँ हम जाते ही हैं देवता बनने के लिए। तो तुम अभी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का पाठ पढ़ते हो। पाठ पढ़ाया जाता है याद के लिए। पाठ आत्मा पढ़ती है। देह का भान उतर जाता है। आत्मा ही सब कुछ करती है। अच्छे अथवा बुरे संस्कार आत्मा में ही होते हैं।

❋ योग-

1] भूलने का अभ्यास रहता है सुबह को। बस, अब वापिस जाना है।

2] बाप को याद करेंगे तब तो किचड़ा निकलेगा।

3] बाप को याद करना है, जो याद करेंगे वह अपने धर्म में ऊंच पद पायेंगे।

❋ धारणा-

1] मीठे बच्चे– बाप की याद से बुद्धि स्वच्छ बनती है, दिव्यगुण आते हैं इसलिए एकान्त में बैठ अपने आपसे पूछो कि दैवीगुण कितने आये हैं?

2] जब कोई में यह भूत प्रवेश करते हैं तो बहुत नुकसान कर देते हैं इसलिए उनसे किनारा कर लेना चाहिए। जितना हो सके अभ्यास करो– अब घर जाना है फिर नई राजधानी में आना है। इस दुनिया में सब कुछ देखते हुए कुछ भी दिखाई न दे।

3] बाप समझाते हैं बहन-भाई भी नहीं, भाई-भाई समझो और बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और कोई तकलीफ नहीं है। पिछाड़ी में और कोई बातों की दरकार नहीं पड़ेगी। सिर्फ बाप को याद करना है, आस्तिक बनना है।

4] बच्चे एकान्त में बैठ विचार करो–बाबा को याद करके हमको यह बनना है, यह गुण धारण करना है।

5] बाप कहते हैं **''देही-अभिमानी भव''**। बाप से ही वर्सा लेना है।

6] कोटों में कोई, तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। कोटों में कोई ऐसी याद में रहते होंगे। ट्राई करके देखो। और कोई को नहीं देखो। बाप को याद करते स्वदर्शन चक्र फिरात रहो। तुमको अथाह खुशी होगी।

7] सदा ज्ञान के सिमरण में रहो तो सदा हर्षित रहेंगे, माया की आकर्षण से बच जायेंगे।

8] चाहे कैसी भी परिस्थितियां हों, समस्यायें हों लेकिन समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार कर लो जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है– जिसको कहते हैं ड्रामा और ड्रामा के हम हीरो पार्टधारी हैं। हीरो पार्टधारी अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले इसलिए कड़ी समस्या को भी खेल समझ हल्का बना दो, कोई भी बोझ न हो।

❋ सेवा-

1] कोई को भी तुम समझाओ तुम आत्मा हो, परमपिता परमात्मा बाप है, अब बाप को याद करो। तो उनकी बुद्धि में आयेगा दैवी प्रिन्स बनना है तो इतना पुरूषार्थ करना है। विकार आदि सब छोड़ देना है।